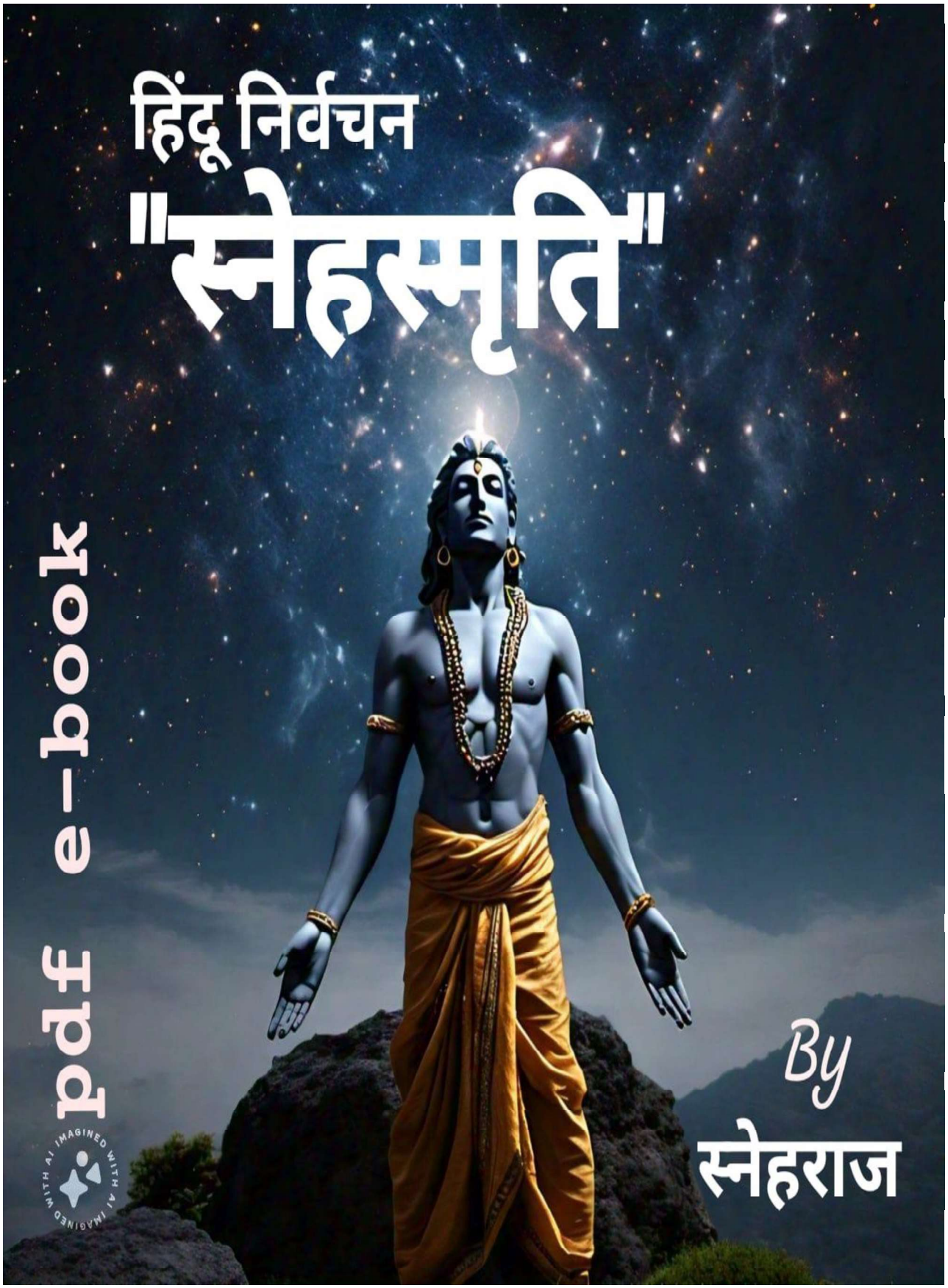
हिंदू निर्वचन
"स्नेहस्मृति"
pdf e-book
By
स्नेहराज
IMAGINED WITH AI

विश्व शांति, विश्व एकता और विश्व रक्षा के लिए

स्नेहराज फाउंडेशन

आयोजित करता है

सनातन धर्म परिचय यज्ञम्

(हैन्दव निर्वचन यात्रा)

(इसके भाग के रूप में, पुस्तक-1 (संस्करण-1.85.3) विश्व मानविकता को समर्पित है)

स्नेहस्मृति

PDF e-Book

(हे हिन्दू जनपद , सृष्टि में सबसे महान्, ये लीजिये आपका पहचान)

सनातन धर्म का अध्ययन (बुनियादी)

("हिंदू निर्वचन ")

विषय वस्तु संहिताकरण

वी.एस.स्नेहराज

Pdf e-Book-1.85.3

Rs.143.00

विषय-सूची

पेज 3 - विषय-सूची

पेज 8 - परिचय

भाग-1

प्रश्न-1) सनातन या हिंदू धर्म को "मानव को परिपूर्ण बनाने वाला धर्म" क्यों कहा जाता है?

प्रश्न-2) मानव जन्म का अंतिम लक्ष्य स्वर्ग या मोक्ष क्या है?

प्रश्न-3) नास्तिकता, द्वैतवाद, विशिष्टाद्वैतवाद, अद्वैतवाद इनमें से हिंदुओं के ईश्वर की अवधारणा क्या है?

प्रश्न-4) देव मनुष्य और तैंतीस करोड़ देवता...आइए जानते हैं..

प्रश्न-5) क्या हिंदू धर्म एक आस्था है?

प्रश्न-6) क्या हिंदू धर्म एक मत है?

प्रश्न-7) क्या हिंदू धर्म एक भौगोलिक पहचान नहीं है?

प्रश्न-8) हिंदू की परिभाषा क्या है?

प्रश्न-9) "भारत की आध्यात्मिक विरासत" क्या है?

प्रश्न-10 भारतीय आध्यात्मिक विरासत या हिंदू धर्म के सिद्धांत क्या हैं?

प्रश्न-11) हिंदू धर्म को अन्य किन नामों से जाना जाता है?

प्रश्न-12) सनातन या हिंदुओं की मूल ग्रन्थ कौन सी हैं?

प्रश्न-13) कितने वेद हैं? आइए हिंदू दर्शन की मूल बातें जानें:

प्रश्न-14) हिंदू इतिहास पर एक नज़र

प्रश्न-15) हिंदू धर्म को विश्व दर्शन बनाने की मांग का क्या कारण है?

प्रश्न-16) मैंने सुना है कि हिंदू समाज होना चाहिए। क्या यंहा हिंदू समाज नहीं है?

भाग-2

प्रश्न-17) माथे पर धारण करने वाले चन्दन, भस्म , तिलक .. आइए देखें इसके तरीके और अर्थ?

प्रश्न-18) भक्तगण माथे पर कर्पूर ज्योति क्यों लगाते हैं?

प्रश्न-19) हिंदुओं द्वारा एक-दूसरे का अभिवादन करते समय नमस्कार, नमस्ते और प्रणाम कहने का क्या अर्थ है?

प्रश्न-20) पूजा के दौरान नारियल फोड़े जाते हैं। इसकी अवधारणा क्या है?

प्रश्न-21) हिंदू कमरबंध (कटि-सूत्र) क्यों बांधते हैं?

प्रश्न-22) हिंदू अपने नाम में श्री, श्रीमान और श्रीमती क्यों जोड़ते हैं?

प्रश्न-23) क्या मूर्तिपूजा परब्रह्म पूजा के समान है?

प्रश्न-24) हिंदुओं की साधना पद्धतियाँ क्या हैं?

प्रश्न-25) हिंदुओं की पूजा का मूल और पूर्ण क्रम क्या है?

प्रश्न-26) आप मंदिरों में होने वाले अनुष्ठानों, तीर्थस्थलों पर पूजा, नाम जप और होम को किस तरह देखते हैं?

प्रश्न-27) क्या आपने सुना है कि पूजा एक गलत प्रथा है?

प्रश्न-28) हिंदू सुबह के एक खास क्षण को ब्रह्म मुहूर्त क्यों कहते हैं?

प्रश्न-29) कुछ मंदिरों की दीवारों पर कामुकता की छवि क्यों देखी जा सकती है?

प्रश्न-30) हिंदू मंदिर की परिक्रमा क्यों करते हैं?

प्रश्न-31) हिंदुओं का सामाजिक केंद्र कौन सा है? इसके क्या कार्य हैं?

प्रश्न-32) मंदिर और शरीर के बीच क्या संबंध है?

प्रश्न-33) आपने क्यों सुना है कि 'ओम' केवल हिंदुओं के लिए ही नहीं बल्कि पूरी मानवता के लिए है?

प्रश्न-34) क्या ब्रह्मांड में ओंकार ध्वनि मौजूद है?

प्रश्न-35) ओंकार की उत्पत्ति कैसे हुई?

प्रश्न-36) ओंकार को ईश्वर का प्रवेशद्वार कहने का क्या कारण है?

प्रश्न-37) ॐ को ब्रह्मांड का बीज कहने का क्या कारण है?

प्रश्न-38) मंत्रों में सबसे पहले ओंकार का प्रयोग क्यों किया जाता है?

प्रश्न-39) ओं या ओ3म् को संस्कृत में "ॐ" लिखा जाता है, जो सही है?

प्रश्न-40) शिवलिंग संकल्प क्या है? यह कैसे विकसित हुआ?

प्रश्न-41) क्या शिवलिंग का स्वरूप भौतिक रूप से सार्वभौमिक ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करता है?

प्रश्न-42) ऋषिगण शिव मंदिरों में शिवलिंग प्रतिष्ठा को प्रोत्साहित क्यों करते हैं?

प्रश्न-43) त्रिमूर्ति अवधारणा का वैज्ञानिक विश्लेषण:

प्रश्न-44) षोडस संस्कृतियाँ (संस्कार):

प्रश्न-45) चार पुरुषार्थ, चार आश्रम, चार वर्ण:

प्रश्न-46) क्या हिंदू धर्म या सनातन धर्म में जाति व्यवस्था है? जाति व्यवस्था किसकी देन है?

प्रश्न-47) पाँच महायज्ञ कौन-कौन से हैं?

प्रश्न-48) प्रथम पूजा यानी हर शुरुआत में भगवान गणेश की पूजा क्यों की जाती है?

प्रश्न-49) प्रस्थान त्रय क्या है?

प्रश्न-50) इष्टदेवता पूजा अनुष्ठान चरण दर चरण:

प्रश्न-51) ध्यान का अभ्यास कैसे करें...?

प्रश्न-52) मंत्र दीक्षा क्या है?

प्रश्न-53) हिंदू महाकाव्यों में हम अलौकिक प्राणियों को देखते हैं, क्या ये सभी फैंटम, स्पाइडरमैन, हैरी पॉटर आदि जैसी काल्पनिक कहानियाँ हैं?

प्रश्न-54) यह सृष्टि कैसे बनी?

प्रश्न-55) आइए दशा अवतार के बारे में जानें?

प्रश्न-56) प्रार्थना श्लोक जो हर हिंदू को जानना चाहिए:

प्रश्न-57) आगम, निगम और तंत्र का ज्ञान:

प्रश्न-58) तंत्र में पंच मकारों का रहस्य क्या है?

प्रश्न-59) ग्रहण के दौरान मंदिर क्यों बंद रहते हैं?

प्रश्न-60) पैर छूकर नमस्कार किसे कहा जाता है?

प्रश्न-61) क्या संकट के समय साधक को भगवान/गुरु से सहायता मिल सकती है?

प्रश्न-62) हिंदू धर्म अध्ययन की योजना कैसी है?

प्रश्न-63) ब्रह्मचर्य क्या है?

प्रश्न-64) देवी मंदिरों में नींबू के दीपक का रहस्य क्या है?

प्रश्न-65) क्या आप हमें रक्षा बंधन उत्सव के बारे में बता सकते हैं?

प्रश्न-66) अवनि अविटम (श्रावण पूर्णिमा) क्या है?

प्रश्न-67) ओणम उत्सव की चरित्र क्या है?

प्रश्न-68) ओणम का रक्षा बंधन से क्या संबंध है?

प्रश्न-69) सम्राट महाबली का मध्य अमेरिका में मैक्सिको माया सभ्यता से क्या संबंध है?

प्रश्न-70) जब सम्राट महाबली ने राज्य किया था, तब केरल नहीं था, फिर सम्राट महाबली का आगमन केरल का उत्सव कैसे बन गया?

प्रश्न-71) महान व्यक्तित्व (वी.आई.पी.), क्या उनका प्रभाव समाज को आकार देता है?

प्रश्न-72) नेति-नेति सिद्धांत क्या है?

प्रश्न-73) क्या भूमि देवी वायरल बुखार से पीड़ित हैं? क्या इसका कोई इलाज है? डॉक्टर कौन है?

प्रश्न-74) शंकराचार्य ने शास्त्रार्थ में बौद्ध धर्म को कैसे हराया?

प्रश्न-75) होली कैसे मनाई जानी चाहिए?

प्रश्न-76) हिंदू दुनिया के लोगों से क्या अपेक्षा करते हैं?

प्रश्न-77) क्रिया योग क्या है?

प्रश्न-78) हिंदुओं के दुश्मन कौन हैं?

प्रश्न-79) प्रकृति द्वारा हिंदुओं पर क्या जिम्मेदारी डाली गई है?

प्रश्न-80)आदिपराशक्ति को माता नारायण,देवी नारायण,लक्ष्मी नारायण, भद्रे नारायण क्यों कहा जाता है?

प्रश्न-81) क्या आप हमें वेदों की उत्पत्ति के बारे में बता सकते हैं?

प्रश्न-82) क्या हिंदुओं के लिए मांस खाना वर्जित है? क्या हिंदुओं के लिए विदेशी कपड़े वर्जित हैं?

प्रश्न-83) हिंदू धर्मशास्त्र के अनुसार सात माताएँ कौन हैं?

प्रश्न-84) भगवान कृष्ण का विराट रूप (विराट रूप) क्या दर्शाता है?

प्रश्न-85) 'समाधि में बैठना' और 'समाधि में रखा जाना' किसे कहते हैं?

प्रश्न-86) जारी रहेगा.....

(यह प्रकाशन (पुस्तक-1, संस्करण 1.85.3) निरंतर संशोधनों और अद्यतनों के अधीन है। कृपया सदस्य लॉगिन के माध्यम से हमारी वेबसाइट के माध्यम से नवीनतम संस्करण तक पहुंचें)

हिंदू धर्म का अध्ययन (बुनियादी)

परिचय

मानवता आज अपने सबसे बुरे दौर से गुज़र रही है। सबसे पहले, मानव आवास खुद ही खतरे में है। अगले 10 सालों में, ऐसा लगता है कि माँ पृथ्वी को हमें सहारा देने की क्षमता नहीं रहेगी , एसिड रेन, रेडिएशन और रासायनिक उत्सर्जन, क्लोरीन, फ्लोरीन और कार्बन उत्सर्जन, और प्रकृति के दुर्लभ संसाधन खतरनाक रूप से कम होते जा रहे हैं। जलवायु में भयानक परिवर्तन हो रहे हैं। सूर्य से निकलने वाली गर्म लहरों और गर्म गैसों ने जलवायु को बाधित कर दिया है। ग्लोबल वार्मिंग और ग्रीनहाउस गैसों से होने वाले परिवर्तनों में ध्रुवीय बर्फ की पिघलना , समुद्र का जल स्तर बढ़ना, तूफान, भूकंप, वायु और जल प्रदूषण, ओजोन परत का क्षरण और भूमि क्षरण शामिल हैं। पारिस्थितिक जानलेवा अव्यवहारिक होता जा रहा है।

दूसरा, मानव समाज का पतन हो रहा है। हम ऐसे युग में जी रहे हैं, जहाँ सत्य नहीं कहा जा सकता। सच कहें तो, सोचने पर भी जीवन को खतरे में डालने वाली परिस्थितियाँ हैं। हिंसा, अन्याय, झूठ, भ्रष्टाचार, भीख माँगना, हिंसा, शोषण, बलात्कार, कब्जा, स्वार्थ, असंतोष, बीमारी, भूख, आत्महत्या, शरणार्थी जीवन, भयावह मूल्य वृद्धि, बिगड़ती सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन शैली, राजनीतिक गुलामी, सरकारी अधिकारियों का अहंकार, बेहिसाब कराधान, उग्रवाद, राजद्रोह, काला धन आदि बुरी शक्तियों के झंडे तले राज करते हैं। मनुष्य में अच्छाई खत्म हो रही है। सभी भोग के लिए वैसी आसुरी का यह विचार मजबूत हो रहा है। दिल के रिश्ते टूट रहे हैं। हमें मानवता को बचाने की जरूरत है, जो विलुप्त होने का सामना कर रही है। उसके लिए, सत्य, प्रेम, शांति और समृद्धि की एक ऐसी व्यवस्था स्थापित करनी होगी जो वर्तमान व्यवस्था को बदल दे। उसके लिए, पहली बार, मनुष्य को पूरी तरह से मानव बनना होगा। "पूर्ण मानव" क्या है?

एककोशिकीय जीव के रूप में जीवन ने जल में अपनी जीवन यात्रा शुरू की, जल में रहने वाले जीवों, पौधों, उभयचरों और बहुकोशिकीय रूपों में विकसित होकर आज हम जिस मानव रूप को देखते हैं, वह पशु रूपों में प्रवेश करने के बाद, आज, यद्यपि जीवन ने मानव रूप धारण कर लिया है, यह पशु-

मनुष्य ही बना हुआ है। क्या हमें इस पशु अवस्था से ऊपर नहीं उठना चाहिए? मानवता की ओर!, क्या हमें मनुष्य नहीं होना चाहिए, क्या हमें मनुष्यों की तरह नहीं रहना चाहिए? इसके लिए हमें मानवता को जानना होगा, यह पशुता से किस प्रकार भिन्न है वो भी जानना होगा, हमें मानवता को जानना होगा।

अगर आप यह जानना चाहते हैं, तो आपको हिंदू धर्म को जानना होगा, यही एकमात्र रास्ता है। इस धरती पर केवल हिंदू धर्म ही मानव जाति को पशु अवस्था से मानवता की ओर ऊपर उठाता है। इसलिए हमें हिंदू धर्म को समझकर मानवता की ओर बढ़ना होगा। इस प्रकार, वास्तविक मनुष्य के रूप में, हमें इस धरती पर सत्य, भाईचारे, एकता, अखंडता, स्वतंत्रता, प्रेम, समृद्धि, शांति और सद्भाव की मानवता की धर्मध्वजा को गरुड़ पथ पर लहराना होगा।

जहाँ सर्वत्र आध्यात्मिक सौन्दर्य भरा हो, किसी भी चीज का भय न हो, जहाँ सभी लोगों का उद्देश्य सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक तथा ईश्वर स्वरूप बनना हो। झूठ, छल, गरीबी, भूख, रोग, लाचारी से मुक्त, सभी प्रकार के भय से मुक्त, सर्वत्र भोजन, स्वास्थ्य, फल, फूल, शुद्ध जल, शुद्ध वायु, निर्भरता, प्रचुर मात्रा में उपलब्ध, प्रेम, विश्वास, शील, सत्य, समानता, दया से परिपूर्ण, प्रकृति हो। प्रकृति के अर्जित संसाधनों का सदैव मानव समाज के विकास के लिए उपयोग करना तथा यह विश्वास करना कि सभी का उत्थान ही व्यक्ति का उत्थान है। जहाँ हमें उत्तम मानवों से भरा हुआ, प्रेममय-विश्वासयोग्य दिव्य प्रकाश से भरा हुआ, आनंद से भरा हुआ, सर्वसुखद तथा समृद्ध विकास मिले, इन सबके साथ हमें सीमाहीन महान साम्राज्य या सच्चा स्वर्ण युग स्थापित करना है।

इस पुस्तक की सामग्री को विभिन्न स्रोतों से संकलित किया गया है, जिसमें श्रद्धेय ऋषि-मुनियों और ऑनलाइन संसाधन शामिल हैं। सावधानीपूर्वक सत्यापन और समीक्षा के बाद, मैं इसे आपके समक्ष प्रतिक्रिया, आलोचना और परिशोधन के लिए प्रस्तुत करता हूँ। कठोर पुनर्परीक्षण के बाद, यह पांडुलिपि अनुमोदन के लिए सनातन विश्व आचार्य सभा को प्रस्तुत की जाएगी।

सनातन विश्व आचार्य सभा से सर्वसम्मति से अनुमोदन मिलने पर, इस संहिताकरण को औपचारिक रूप से पुनर्जीवित सनातन धर्म के लिए निर्णायक नैतिक संदर्भ मार्गदर्शिका के रूप में मान्यता दी जाएगी, जो उभरती हुई नई विश्व व्यवस्था के साथ संरेखित होगी।

ईश्वर सभी व्यक्तियों को सत्य और न्याय की खोज में मार्गदर्शन करें। अच्छाई फले-फूले, और प्रत्येक व्यक्ति के प्रेमपूर्ण प्रयासों से सत्य की विजय हो।

चलो शुरू करें....

कुथुपरम्बा (केरल) **वी.एस.स्नेहराज.**

श्वेतवराह कल्पम, वैवस्वत मन्वंतरम् -7/14,

28/71 कलियुग-वर्ष 5125,

कुंबम 28 (मलयालम महीना)

(2024, 12 मार्च)